सिक्किम विश्वविद्यालय
स्थापित: 2007

वॉल्यूम –V
अंक - III
दिसंबर , 2017

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

भारतीय नेपाली की पहचान पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

सिक्किम विश्वविद्यालय ने 6 -7 अक्टूबर, 2017 को चिंतन भवन में भारतीय नेपाली की पहचान पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस अवसर पर 40 से अधिक भारतीय नेपाली, जिन्होंने साहित्य, संगीत, पत्रकारिता, नाटक, खेल, पर्वतारोहण, फिल्म निर्देशन, सेना, आदि के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम कमाया हैं, अपने-अपने संघर्ष और सफलता की कहानियो के बारे में राज्य के युवाओं को बताने के लिए गंगटोक में इकट्ठे हुए हैं ताकि राज्य के युवाओं के माध्यम से पूरे देश के युवाओं को सफल बनने और निराश नहीं होने के लिए प्रेरित करने के एकमात्र उद्देश्य को पूरा किया जा सके। सम्मेलन के दौरान माननीय मुख्यमंत्री डॉ. पवन कुमार चामलिंग द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया।

भारतीय नेपाली में राष्ट्रीय पहचान पुराना मुद्दा है। उन्हें विदेशियों, प्रवासियों और भारत के लिए सुरक्षा संकट के रूप में माना जाता है, अगर हम भारत की सीमाओं को हासिल करने में और भारत और चीन के साथ युद्ध के दौरान उनके बलिदानों पर विचार करते हैं, तो यक एक विडम्बना है। इस सम्मेलन का आयोजन उन लोगों के लिए नहीं किया गया था जो अपनी राष्ट्रीयता पर संदेह करते हैं और जो उनकी धारणाओं के आधार पर सभी प्रकार के आरोप लगाते हैं। इसके बजाय इसे अपनी उपलब्धियों का जश्न मनाने और दिखाने के लिए आयोजित किया गया ताकि सिक्किम के युवाओं को स्वयं को सफल बनाने के लिए प्रेरणा मिले।

संपादकीय

एसयू क्रॉनिकल के लंबे समय से प्रतीक्षित संस्करण को वापस प्रस्तुत करने में मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। सबसे पहले मैं कुछ तकनीकी कारणों से प्रकाशन में एक लंबा विराम होने के लिए सभी पाठकों से क्षमा प्रार्थी हूँ। अक्टूबर के महीने वास्तव में विश्वविद्यालय के लिए एक संक्रमण का दौर था क्योंकि इस दौरान हमने प्रशासन में बदलाव देखा है। प्रो. टी. बी. सुब्बा ने 13 अक्टूबर, 2017 को कुलपति के रूप में पांच वर्ष की पूर्ण अवधि पूरी की। उसी प्रकार श्री पीके सिंह ने भी वित्त अधिकारी के रूप में अपना कार्यकाल पूरा किया।

हम अपने नए कुलपति (कार्यवाहक) प्रो. ज्योति प्रकाश तामांग और वित्त अधिकारी श्री देवाशीष पाल का स्वागत करते हैं, जिन्होंने क्रमशः दिनांक 16.10.2017 और दिनांक 12.10.2017 को कार्यभार ग्रहण किया है। हम पिछले कुछ महीनों में विश्वविद्यालय में शामिल होने वाले सभी शिक्षण और गैर-शिक्षण कर्मचारियों को भी गर्मजोशी से स्वागत करते हैं।

मैं भी पहली बार संपादक के रूप में आपके समक्ष लिख रही हूं, क्योंकि अंत में ज़िम्मेदारी मेरे उपर आया है। मुझे आशा है कि मैं सभी के लिए अच्छी पठन समग्रियों को प्रकाशित करने की विरासत को निरंतर बनाए रखने में सक्षम हो सकूँगी।

पढ़ने का आनंद लें और गर्म रहें !!

-कुंजनी प्रकाश डर्नल

इस अंक में

संपादकीय

भारतीय नेपाली शिखर सम्मेलन 2017 पर रिपोर्ट

प्रथम प्रो. समीरा मैटी स्मारक व्याख्यान पर प्रस्तुत रिपोर्ट

प्रतिनिधित्व की राजनीति : एक अंतर्विषयक परिप्रेक्ष्य पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी पर रिपोर्ट

डॉ. विमल किशोर, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग और सुश्री आशि पेम पेम वांगमो, पर्यटन विभाग द्वारा सिक्किम विश्वविद्यालय में छात्रों की मूल्यांकन प्रक्रिया पर एक मूल्यांकन अध्ययन

प्रो. टी. बी. सुब्बा ने सिक्किम विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में सम्पूर्ण कार्यावधि को पूरा किया : एक संक्षिप्त रिपोर्ट

आगामी कार्यक्रम

ईमेल पता : suchronicle@cus.ac.in

प्रो. समीरा मैटी स्मारक व्याख्यान

दिनांक: 1 नवंबर 2017

स्थान: रापज्योर कावेरी हॉल।

मानवशास्त्र विभाग ने 1 नवंबर, 2017 को रापज्योर कौवेरी हॉल में प्रथम प्रो. सैमरा मैटी स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया।

डॉ. के.आर.राममोहन, अध्यक्ष, मानवशास्त्र विभाग ने 1 नवंबर, 2017 को इस स्मारक व्याख्यान आयोजित करने की आवश्यकता के बारे बताया, क्यूंकि प्रो. समीरा मैटी का जन्मदिन उसी दिन पड़ता है। उन्होंने विभाग में प्रोफेसर समीरा मैटी के योगदान के बारे में बताया।

प्रो. ज्योति प्रकाश तामांग, कुलपति (कार्यवाहक) ने उन्हें याद किया और व्यक्त किया कि आने वाले दिनों में उनकी अंतर्दृष्टि और जानकारी विभाग के लिए मूल्य की होगी।

प्रो. शेख मंडल, मानवशास्त्र विभाग, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय ने '21 वीं सदी का ज्ञान काल, मुद्दे और समस्याएं: एक अंतःविषयक दृष्टिकोण' पर स्मारक व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में, प्रो मंडल ने 21 वीं सदी के ज्ञान काल के सैद्धांतिक और पद्धतिगत दोनों पहलुओं, पूरे विश्व, विशेष रूप से भारत द्वारा वर्तमान समय में देखे जा रहे विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डाला है। उनके व्याख्यान में वैश्विक समस्याओं को समझने और उपयुक्त विकल्पों के माध्यम से समस्याओं का निवारण करने हेतु विभिन्न समाज वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से समृद्ध सामग्री थी।

"प्रतिनिधित्व की राजनीति: अंतर्विषयक परिप्रेक्ष्य" पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

अंग्रेजी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय ने 1 से 3 नवंबर 2017 तक मानव संसाधन विकास विभाग, सिक्किम सरकार के सहयोग से और आंशिक रूप से आरयूएसए द्वारा प्रायोजित "प्रतिनिधित्व की राजनीति: अंतर्विषयक परिप्रेक्ष्य" पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। एक 'प्रतिनिधित्व' के मुद्दों से लगातार उलझी हुई एक ऐसी दुनिया में प्रतिनिधित्व रिपोर्ट का एक कार्य बने रहने के लिए होता है। प्रतिनिधित्व के कार्यों में समावेशन और बहिष्करण की एक श्रृंखला शामिल है, जो कभी-कभी पत्राचार की एकरूपता में बाधा डालती है और विचारधारा के आदेश को अपनाती है। इसलिए इस सम्मेलन को अपनी सभी जटिलताओं के साथ प्रतिनिधित्व के विश्लेषण करने के लिए एक व्याख्यान स्थान प्रदान करने के लिए आयोजन किया गया था। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर ज्योति प्रकाश तामांग, कुलपति (कार्यपालक) ने की और इस अवसर पर श्री आर.बी. सुब्बा, माननीय मंत्री, मानव संसाधन विकास, कानून, संसदीय कार्य और खेल और युवा मामले, सिक्किम सरकार मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। प्रोफेसर सुकान्त चौधुरी, प्रसिद्ध प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, यादवपुर विश्वविद्यालय ने मुख्य भाषण प्रदान किया। संगोष्ठी के स्रोत विद्वान के रूप में प्रोफेसर रॉबर्ट डॉन एडम्स, फ्लोरिडा अटलांटिक यूनिवर्सिटी, यूएसए; प्रो. अनुराधा डिंगवानी नीधाम, ओबरलीन कॉलेज, ओहियो, डॉ. लॉरेंस नीधाम ओहियो, प्रो. सौगाता भादुरी, अंग्रेजी विभाग, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, प्रो. सिमी मल्होत्रा, अंग्रेजी विभाग,जामियामिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, प्रो अनीता सिंह, अंग्रेजी विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, और प्रो. अमित भट्टाचार्य, अंग्रेजी विभाग, गौर बंग विश्वविद्यालय, मालदा, पश्चिम बंगाल। नब्बे प्रतिभागियों ने तीन दिनों की अवधि में चार समानांतर सत्रों में पत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी इस अर्थ में वास्तव में अंतर-विषयक था जिसमें विषय से परे के मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया था। सेमिनार 'प्रतिनिधित्व' के विभिन्न पहलुओं पर एक इंटरैक्टिव पैनल चर्चा के साथ संपन्न हुआ। सेमिनार में प्रस्तुत चयनित पेपरों को संपादित खंड में प्रकाशित किए गए।

सिक्किम विश्वविद्यालय में छात्र मूल्यांकन स्वरूप : एक मूल्यांकन अध्ययन

डॉ. विमल किशोर * और सुश्री आशि पेम पेम वांगमो**

* सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, व्यावसायिक अध्ययन स्कूल

** सहायक प्राध्यापक, पर्यटन विभाग, व्यावसायिक अध्ययन स्कूल

मूल्यांकन शिक्षा की किसी भी प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। मूल्यांकन बच्चों की शक्ति और कमजोरियों का अध्ययन करने के लिए शिक्षक को आवश्यक प्रतिक्रिया प्रदान करता है और आगे की योजना के लिए आधार तैयार करता है। विभिन्न विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों में परीक्षा प्रणाली को सुधारने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने छात्रों से आंतरिक और बाह्य मूल्यांकन के माध्यम से छात्रों के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए कदम उठाने का आग्रह किया है। आज कल कई विश्वविद्यालयों ने भारत में आंतरिक मूल्यांकन पैटर्न शुरू कर दिया है। लेकिन संकाय सदस्यों और आंतरिक मूल्यांकन में शामिल लोगों के बीच एक प्रश्न उठता है कि क्या आंतरिक मूल्यांकन उचित है, क्या इसके उद्देश्यों को पूरा करता है, क्या यह कार्यप्रणाली, प्रभावशीलता और वैज्ञानिक वैधता से संबंधित है? वर्तमान अध्ययन वर्ष 2008 के बाद से सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा शुरू की गई आंतरिक मूल्यांकन प्रणाली के पैटर्न की समीक्षा करने का एक प्रयास था। वर्तमान अध्ययन के लिए सिक्किम विश्वविद्यालय के प्रशासकों, शिक्षकों, छात्रों और सिक्किम विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों के शिक्षकों, छात्रों, प्राचार्यों से नमूने संग्रह किए गए थे। वर्तमान अध्ययन के लिए अपेक्षित डेटा एकत्र करने के लिए जांचकर्ता ने वार्षिक रिपोर्ट, प्रॉस्पेक्टस और स्वयं-निर्मित प्रश्नावली की प्रतियों का उपयोग किया। डेटा का विश्लेषण करने के लिए सामग्रियों का विश्लेषण, बारंबार वितरण, प्रतिशतवार विश्लेषण और टी-परीक्षण की तकनीकों का उपयोग किया गया था। वर्तमान अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि :

- सिक्किम विश्वविद्यालय में मूल्यांकन का तरीका पूरी तरह से आंतरिक था । सेमेस्टर प्रणाली में एक छात्र का मूल्यांकन मध्य सेमेस्टर परीक्षणों, टर्म पेपर/व्यावहारिक परीक्षाओं, सेमेस्टर समाप्ति परीक्षाओं आदि के माध्यम से किया जा रहा था।

- विश्वविद्यालय चयन आधारित क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस) का पालन करता है। निष्णात पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए एक छात्र को 64 क्रेडिट अर्जित करना चाहिए। सिक्किम विश्वविद्यालय में एक क्रेडिट 15 कक्षाएं या 25 अंक के बराबर है।

- सिक्किम विश्वविद्यालय में आंतरिक मूल्यांकन के अभ्यास और यूजीसी द्वारा अनुशंसित कदमों को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान अध्ययन के जांचकर्ताओं ने पाया है कि सिक्किम विश्वविद्यालय में आंतरिक मूल्यांकन शुरू करने का अनुभव लाभकारी है। आंतरिक मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य छात्रों को उपचारात्मक शिक्षण और निदान करना है। इसमें गतिविधि आधारित शिक्षा पर बल दिया गया है। जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, सिक्किम विश्वविद्यालय सत्रीय परीक्षा में 50% और टर्म-एंड परीक्षा में 50% अंक देता है। जांचकर्ताओं ने यह भी बताया है कि टर्म-एंड परीक्षा प्रश्नपत्रों और छात्रों के उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन संबंधित शिक्षकों द्वारा किया जाता है। प्रत्येक विभाग के सभी शिक्षक समय सारिणी तैयार करते हैं, प्रश्नपत्र तैयार करते हैं, प्रश्न पत्रों को मॉडरेट करते हैं, उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हैं, और अंत में उसे परीक्षा नियंत्रक के पास जमा करते हैं।

सिक्किम विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य कर रहे अध्यापकों और क्किम विश्वविद्यालय से संबद्ध कॉलेजों में शिक्षकों के बीच अंतररिक मूल्यांकन प्रणाली के प्रति धारणाओं में महत्वपूर्ण अंतर है।

- सिक्किम विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों और सिक्किम विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कॉलेजों में अध्ययनरत छात्रों की आंतरिक मूल्यांकन प्रणाली के प्रति धारणाओं में महत्वपूर्ण अंतर है।

-उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं की सामग्री का विश्लेषण करने से हमें स्पष्ट रूप से परिणाम प्राप्त हुआ है कि ज्यादातर शिक्षकों ने 87.5% (सिक्किम विश्वविद्यालय में पढ़ा रहे अध्यापकों) और 80% (सिक्किम विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों में पढ़ा रहे अध्यापकों) ने अपना मत दिया है कि संबंधित शिक्षक /व्यक्तिगत शिक्षक का निर्णय आंतरिक मूल्यांकन अंक प्रदान करने के संबंध में अंतिम माना जाता है।

- इसके अलावा, अधिकांश उत्तरदाताओं ने कहा कि संस्थान में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है, जिसमें छात्रों को अपने सत्रीय परीक्षण अंक बेहतर कर सकते हैं। दूसरी तरफ, बहुत कम उत्तरदाताओं ने कहा कि छात्र अपने सत्रीय परीक्षण अंक को सुधार सकते हैं।

- परिणाम आगे बताता है कि अधिकांश शिक्षक और छात्र सिक्किम विश्वविद्यालय में आंतरिक मूल्यांकन की मौजूदा प्रणाली से संतुष्ट हैं।

स्वीकृतियाँ

लेखकों ने वर्तमान अध्ययन को पूरा करने के लिए सिक्किम विश्वविद्यालय के वित्तीय समर्थन को स्वीकार किया है। वर्तमान अध्ययन में प्रतिबिंबित राय लेखकों के हैं और अनुदान एजेंसी के लोगो का हो, यह जरूरी नहीं है।

प्रोफेसर टी.बी. सुब्बा ने कुलपति के रूप में अपना कार्यकाल पूरा किया

प्रो. टी. बी. सुब्बा ने सिक्किम विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में पांच साल का कार्यकाल पूरा किया। उन्होने दिनांक 13 अक्तूबर, 2017 को दोपहर को संविधियों के अनुसार विश्वविद्यालय के वरिष्ठतम प्राध्यापक प्रो. ज्योति प्रकाश तामांग को प्रभार सौंप दिया। प्रोफेसर टी.बी.सुब्बा ने शिलांग में स्थित उनके मूल विश्वविद्यालय, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग में पुन: कार्यभार ग्रहण किया।

प्रो. सुब्बा को एक बहुत ही विनम्र, धैर्यशील, सौम्य किन्तु सख्त प्रशासक के रूप में स्मरण किया जाएगा। विश्वविद्यालय में उनका योगदानों को कभी भी नहीं भुलाया जाएगा। उनके कार्यकाल में ही लिम्बु, लेप्चा और भूटिया के विभागों की स्थापना की गई और सिक्किम विश्वविद्यालय इन भाषाओं में स्नातकोत्तर उपाधि प्रदान करनेवाला विश्व का एकमात्र विश्वविद्यालय है।

अपने विदाई संदेश में प्रोफेसर सुब्बा ने विश्वविद्यालय की प्रगति के लिए एक साथ मिलकर काम करने के लिए सभी संकाय सदस्यों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों और छात्रों से आग्रह किया।

आगामी कार्यक्रम:

बुनियादी भौतिकी और टाइपोग्राफी पर दो-सप्ताह के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

दिनांक: 29 जनवरी से 9 फरवरी 2018 तक

स्थान: सिक्किम विश्वविद्यालय